

दैनिक जागरण

प्रेम अहंकार से मुक्त करता है

सड़क सुरक्षा बोर्ड

क्रिस तरह कुछ आवश्यक मामलों में भी समय पर कदम उठाने से बचा जाता है, इसका ही उदाहरण है लंबी देरी के बाद राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा बोर्ड के गठन को अधिपूजा जरी होना। इससे खराब बात और कोई नहीं हो सकती है। सतत वृष को प्रतीक्षा के बाद इस बोर्ड का गठन किया जा सका और वह भी तब, जब सुप्रिम कोर्ट ने इस बोर्ड के गठन में देरी को लेकर असन्तुष्टता व्यक्त की।

समझना कठिन है कि बेलागाम मार्ग दुर्घटनाओं के बाद भी सड़क सुरक्षा बोर्ड के गठन में देरी क्यों हुई? वह क्या तो बहुत पहले हो जाना चाहिए था, क्योंकि देश में व्ष दर व्ष मार्ग दुर्घटनाएं बढ़ती जा रही हैं। इन दुर्घटनाओं में मरने और घायल होने वालों की संख्या निरन्तर में सबसे अधिक है। मार्ग दुर्घटनाओं के मामले में भारत का रिकार्ड बेहद खराब ही नहीं, बल्कि अमानक भी है, क्योंकि देश में वाहनों की संख्या कई देशों से कम है।

सहयोग आवश्यक

विचार में भी विकसित भारत-प्राणेश रोजगार एवं आजीवनिक गारंटी अधिनियम (जीवी-जीएमजी) लागू हो जाने के बाद श्रमिकों को अब नए सिरे से निबंधन करना होगा। इसके पूर्व मरणांगन में राज्य के 1.42 करोड़ श्रमिकों को इस योजना से रोजगार नहीं मिल सका था, क्योंकि उनको आधार सॉलिंग नहीं हो पाई थी।

जीवी-जीएमजी के निबंधित श्रमिकों की सूची पारदर्शी और नृतिपुस्त हो, सरकार इसके प्रति सचेत रहे

प्रति राज्य सरकारें इसकी शोचना के शक्ति सन्निय और सचेत रहें। सबसे पहले जरूरी है श्रमिकों के पास आधार कार्ड की उपलब्धता। ई-केवाईएस भी आवश्यक है। इसके लिए प्रत्येक व्यवस्था की जानी चाहिए। मरणांगन में निबंधित श्रमिकों की संख्या 2.57 करोड़ थी, लेकिन 1.15 करोड़ ही तो आधार सॉलिंग हो पाई थी। एंशो स्थिति फिर न होने इसके लिए इस प्रक्रिया को पूरी करने के वे नए उपाय किए जाएं, जिसका लाभ हर उस श्रमिक को मिले जिसे रोजगार की सखत जरूरत है।

फिल्मी गीतों में मटके की थाप

श्याम शर्मा

मटके की किस्मत भी अजीब रही है। पर में रहा तो पानी डेढ़ कल्ला रहा और स्टूडियो में पहुंचना तो गीतों को। जिस मिट्टी के टुकड़े को लोग बरपेटे के किसी कोमें में रखकर भूल जाते थे, उसी ने हिंदी फिल्म संगीत के अनेक ब्राह्मण गीतों में ऐवंत लूज आज भी सुनाई देती है।

मिट्टी के घड़े ने हिंदी फिल्मों के अनेक गीतों को ऐसी ठाठ और ऐसी गिटास धोली कि उसकी ठूंठ आज भी सुनाई देती है।

1950 के दशक में यह कई संगीतकारों की प्रिय ब्राह्मण गीत। फिल्म ब्राह्मण की गीत 'भुला नहीं देना जी' आज भी अनेक मधुरता के साथ-साथ प्रफुल्लित में सुनाई देते बानी मटके की खरक के लिए याद किया जाता है। उस दौर के संगीतकार केवल धुन नहीं बनाते थे, बल्कि वे ध्वनियों से बालागण भी करते थे।

लोकधुनें और लोकबाद्यों को महत्व देने वाले संगीतकारों में जयदेव का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। किम्प दे बूंद बना का गीत 'पैलल की पेरी गणगी' इसका नूतन उदाहरण है। कई मटके और गणगी की ध्वनियें केवल राजवादे नहीं, बल्कि गीत के स्वभाव का हिस्सा बन जाते हैं।



पाकिस्तान से शांति की निराधार आस

पाकिस्तान के साथ पारंग के माधुरी पैकेटरो का रचना अधारी और पंडित को एक जुद्ध में रखने जैसा है।

भारत और पाकिस्तान के 116 व्यक्तियों के एक समूह ने भारत और पाकिस्तान के प्रथममंत्रियों को एक संयुक्त पत्र लिखकर दोनों देशों के बीच संबद्ध फिर से शुरू करने और सौहार्दपूर्ण संबंधों की दिशा में प्रयास करने का अनुरोध किया है। इस पत्र की पहल भारतीय संसद संतर फार पीस एंड प्रोग्रेस द्वारा की गई है। भारत की ओर से इस पत्र पर फारूक अख्तर, महबूबा मुस्ती जैसे पूर्व मुख्यमंत्री और अलावावादी मोहम्मद उमर फारूक के नाम प्रमुख हैं।



जाना चाहिए कि क्या वे इससे सहमत हैं कि पाकिस्तान ही जैसी देशों के बीच समझौते का विमोचक है? भरो ही यह माना जाए कि प्रथममंत्री इंदिरा गांधी ने बांग्लादेश के निर्माण के बाद पाकिस्तान को सौं का हराने के बाद हिमालय समझौते पर हस्ताक्षर करके गलती की थी, लेकिन यह नकार नहीं किया जा सकता कि इस समझौते के माध्यम से उन्होंने भारत-पाकिस्तान संबंधों को शांति और स्थिरता की राह पर बढ़ाने का इमानदार प्रयास किया था।

इतिहास के सच्चे नायकों की सुध

गत दिनों कोलकाता नगर निगम ने 'सुहरावर्दी एकेन्यू रोड' का नाम बदलकर 'गोपाल मुखर्जी रोड' कर दिया। इस बदलाव को लेकर कांफ्रेंस, टीएमसी एवं वामपंथी बुद्धिजीवी यह तर्क दे रहे हैं कि इस सड़क का नाम हरसन शाही सुहरावर्दी पर नहीं, बल्कि उनके चाचा सर हसन सुहरावर्दी के नाम पर रखा गया था, जो अंग्रेजों के जमाने के जाने-माने शिक्षाविद्, चिकित्सक एवं 1930-34 के बीच कलकत्ता विश्वविद्यालय के वाइस-चांसलर थे।



जीहस का भी भुली को सुझाना आवश्यक। पहाल

वस्तुतः नाम परिवर्तन के विरोध में खड़े उल्लेखनीय बुद्धिजीवी इस मुद्दे को भी अपनी सुविधा से प्रस्तुत कर रहे हैं और तस्वीर के विरोध पत्रलेखों को जान-बूझकर छुपा रहे हैं। जिस हसन सुहरावर्दी के वे एक महान शिक्षाविद्, चिकित्सक, समाजसेवी बनेते हैं जिनके देह, उदाहरण उनकी विद्युत एवं राजनीतिक फुल्लभ उनके भातीले हरसन शाही सुहरावर्दी से अर्धन रूप से जुड़ी हुई हैं। वेनीं न केवल एक ही कुल-खानदान के बांसुरे थे, बल्कि मुस्लिम लीग के नेता भी थे।

भी कहा जा रहा है कि हसन सुहरावर्दी ने ब्रिटिश सरकार को विचार जताने के लिए 1946 में 'नाइटहुड' की उपाधि जताने दी थी। यह भी आस सर है। पूरा सच यह है कि मुस्लिम लीग के आह्वान पर भारत विभाजन की मांग को व्यापक स्वीकृति दिलाते के उद्देश्य से उन्होंने 'नाइटहुड' की उपाधि लीटाई थी। हसन सुहरावर्दी की बेटी आजी चलकर पाकिस्तान में पहली महिला सिविल सेक्रेटरी बनीं, संयुक्त राष्ट्र की पाकिस्तान प्रतिनिधिमंडली की सदस्य बनीं और पाकिस्तान ने उन्हें मशीनरीयत संबंधी नानारिक समान 'निगान-ए-मुनियान' से सम्मानित किया। एक ऐसा व्यक्ति, जो अंग्रेजों का अन्त्य भगत हो, एक महान शक्तिवादी को जेल भिजवाने का ठोपी हो, मुस्लिम लीग के नेता के रूप में भारत के विभाजन का समर्थक हो, युष्क पृथचन के आधार पर बने एक अलग मुस्लिम में आना और अपने बाँसुरी का भविष्य देखना हो, उसके नाम पर भारत के किसी भी शाह, सड़क, इमारत या

नाम क्यों होना चाहिए? आक्षिप्त भारत विभाजन के निम्नतर लोगों का महिमाभूतमंडन क्यों? जहां तक उनके भातीले हरसन सुहरावर्दी की बात है, तो इतिहास में उनके नाम पर हिंदुओं के दे-नो नरसंहार दर्ज हैं। तब बंगाल में मुस्लिम लीग की अंतर्सं संसकार थी। हरसन शाही सुहरावर्दी उसका प्रथममंत्री था। जिना के आह्वान पर 'हायवेरट एक्शन डे' का बंगाल में बह नूतल्व कर रहा था। उसने चीताना बनाकर हिंदुओं का नरसंहार सुनिश्चित किया। पुलिसकर्मियों एवं संसकारी कर्मचारियों को तीन दिन का अकारण अवकाश दे दिया। हायवेरट एक्शन डे के दिन वह स्वयं पुलिस मुख्यालय के निरंत्रण-कक्ष में बैठकर पुलिसकर्मियों को दंगलियों के विरुद्ध कार्रवाई से रोक रहा था। इसका परिणाम यह हुआ कि अनेक कलकत्ता में 6,000 से अधिक हिंदुओं का केवल 72 घंटे में संहार हुआ, 17 जवानों का कथल घायल हुए और एक लाख से अधिक हिंदु वंश हुए। इस दंगे के बाद नरसंहार में हुए देशों में हजारों हिंदुओं का नरसंहार हुआ, बहुराज्यकों की जान-माल का व्यापक क्षति हुई और माताओं-बहनें को अमानुषिक यानाओं का शिकार होना पड़ा। यही हरसन शाही सुहरावर्दी आगे चलकर 1956-57 में पाकिस्तान का प्रथममंत्री बने। इस पर देश के आवसकर-विभागी ने 1945-46 एवं 1946-47 के लिए 50 लाख रुपये का कर लगाया था, लेकिन प्रथममंत्री जहालराल इकबाल ने उदारता दिखाते हुए करंराई से उसे मुक्ति देकर दे और वह अंततः 1948 में स्वामी रूप से पाकिस्तान चला गया। इसके विरोधी गोपाल पृथन ने न केवल दंगलियों से हिंदुओं को रक्षा की, बल्कि कलकत्ता को पाकिस्तान में मिलाते की चिकित्सा सुहरावर्दी एवं मुस्लिम लीग की साक्षिय पर पापी पर दिया। ऐसी में 'सुहरावर्दी एकेन्यू रोड' का 'गोपाल मुखर्जी रोड' में परिवर्तन इतिहास के नायकों और खलनयकों की सही परचान स्थापित करने की दिशा में एक साहसिक कदम है।

(लेखक शिक्षाविद् एवं समाजिक संस्था 'शिक्षा-सोपान' के संस्थापक हैं। response@jagran.com)

रखेया बनाए रखेगा। ऐसे में भारतीय हस्तोक्षकर्ताओं की पहल बहुत अफसोसजनक है। यह अग्राह्य को पंडित के साथ एक ही पलेट पर रखने और पंडित से यह मांग करने जैसा है कि वह अपनी सुरक्षा के लिए कोई जवाबी उपाय न करे।

उक्त पत्र में उल्लिखित प्रस्ताव भी नहीं हैं। इनमें से अधिकतर भारत-पाकिस्तान समय संबद्ध प्रक्रिया का हिस्सा रहे हैं, जिस पर दोनों देशों ने सितंबर 1998 में पहली बार सहमति दी थी। वजनपेयी और मरमोहन सिंह के कार्यकाल के दौरान यह संबद्ध प्रक्रिया जारी रही, लेकिन आतंकी हमलों के पृष्ठते ठोस प्रमाण सामने नहीं आ सके। कारण स्पष्ट है कि किसी बड़े आतंकी हमले के बाद भारत सरकार आतंकी संबद्ध प्रक्रिया जारी रखे? इससे जनक्रोध हो जाएगा। पत्र से जुड़े लोगों की प्रतीतिगत परिधि हीम कि पाकिस्तान सारा प्रतिपत्तन का केंद्र हमेशा से रहेगा रही है और वहमान सैन्य प्रमुख तो इतने शक्तिशाली बना दिए हुए हैं कि उन्हें फौल्ल मारतों को पुरोवा प्रान्त हो चुका है। उनका भारत के प्रति शौर शतावृत्तों पृथिकेकिसी से छिपा नहीं रहा। परलगत हमले से चंठ दिनें पहले ही भारतगत कला हाथ में पाकिस्तान का निर्माण किया। स्थिति के आधार पर हुआ था, जो यह मानता है कि हिंदू और मुस्लिम अलग-अलग कम और शूरतमाल अलग-अलग हैं। इस विद्वत् के अनुसार तो देशों देश सदैव एक-दूसरे के पृष्ठते रहेंगे। ऐसे में पाकिस्तानियों से यह पृष्ठते उचित होगा कि वे हिंदू विद्वत् पर उनके क्या विचार हैं। (लेखक पूर्व राजनयिक हैं। response@jagran.com)



सौभाग्य का सूरज

ईश्वर, भय, क्रोध, घृणा नकारात्मक भाव हैं। प्रायः कहा जाता है कि ईश्वरों मत करो, घृणा और द्वेष मत करो, सकारिये वे पाप कर्म हैं। आज वह व्यक्ति नृष्टि से ही नहीं, बल्कि स्वस्थता की नृष्टि से ही महत्वपूर्ण निर्देश बना गया है। विधान ने यह मणुगिणत कर दिया है कि जो व्यक्ति स्वस्थ नरना चाहता है, उसे निषेधात्मक भावों से बचना चाहिए। बार-बार क्रोध करना, चिड़चिड़ापन, मूड का बिगड़ना रहना-ये सब भाव हमारी समस्यओं से लड़ने की शक्ति को प्रहित करते हैं। इससे प्रत्येक व्यक्ति बहुत जल्दी बीमार पड़ जात है। अति घिनौन, अति स्मृति और अति कल्पना-ये भी समस्य हैं जो हमारे जीवन स्वस्थ हैं और वह समाधान खोजता है। यही समस्य व्यक्ति को अशक्ति बनाती है। जरूरत है संतुलित जीवनशैली की। जीवनशैली के शुभ मुहूर्त पर महाम मन उठाते धुप को तसल जलागे भरत हो जाए, क्योंकि अती नरुहा भयक्रांति, शकित, अहमपर मन समस्यओं का जनक होता है। यदि हमारे पास विवशय, सहास, उमंग और संकल्पित मन है, तो नृत्तियों का कोई नाशक हमें अपने पृथ से विचलित नहीं कर सकी और सरसलता का राजमगनी भी यही है। व्यक्ति के सकारात्मक भावों की सौभाग्य का सूरज बनती है। सौभाग्य का प्रसज उचित करने के लिए मन की भूमि पर विचारों की सही संघरकर उदयते होते हैं। अति प्रयत्न होना, वैसी ही फूल-फूल गीतों। मन में किसी के लिए अहर्हाय वा बुद्ध्य के बीत करने से पहले ध्यान रखें कि वे आपके भीतर ही जन्ई फैलाएँ। सार्मी देवद ब्रह्मचारी

Advertisement for 'Sangam' magazine, featuring a list of authors and their works. The text includes 'Sangam' magazine details, a list of authors like 'Sangam', 'Sangam', 'Sangam', and their respective works. It also mentions 'Sangam' magazine details and a list of authors.



कैलाश खिरनी
उच्च शिक्षा मामलों के जनकार

आजकल

रोजगार सृजन से ही आर्थिकी को विस्तार

प्रधानमंत्री विकसित भारत रोजगार योजना (पीएम-वीबीआरवाई) इस समय रोजगार सृजन, औद्योगिक श्रम बाजार के विस्तार और सामाजिक सुरक्षा कवरेज को लेकर राष्ट्रीय चर्चा के केंद्र में है। रोजगार पाने वाले युवाओं और उद्योगों दोनों को समान रूप से प्रोत्साहित करने का इसका दांचा इस पारंपरिक रोजगार योजनाओं से अलग पहचान देता है। भारत जैसे युवा देश के लिए रोजगार आर्थिक आवश्यकता के साथ ही सामाजिक स्थिरता, मानव पूंजी निर्माण और समावेशी विकास का आधार भी है। ऐसे में इस योजना का महत्व बढ़ जाता है

सुरक्षा के बीच लंबे समय से विद्यमान अंतराल को कम करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण हस्तक्षेप के रूप में उपलब्ध है। पिछले एक दशक में भारत का सामाजिक सुरक्षा कवरेज 19 प्रतिशत से बढ़कर 64.3 प्रतिशत तक पहुंचना एक अच्छी बात है। इसी संदर्भ में रोजगार सृजन के अंकड़े को 2023 से 2027 के बीच प्रत्येक एक प्रतिशत अंकड़ प्रत्येक बूटि के साथ रोजगार से 1.11 प्रतिशत बूटि दर्ज हुई है, तो यह संकेत देता है कि आर्थिक गतिविधियों का प्रभाव श्रम बाजार तक अपेक्षाकृत अधिक प्रभावी रूप से पहुंच रहा है।

हिर भी किसी भी सार्वजनिक नीति का मूल्यकृत करके उसके धोषित लक्ष्यों या प्राथमिक अंकड़ों के आधार पर नहीं किया जा सकता। वास्तविक प्रश्न यह है कि क्या यह योजना दीर्घकालिक और टिकाऊ रोजगार सृजन को प्रोत्साहित करेगी? इसका उत्तर यह होगा कि प्रभावशाली और टिकाऊ रोजगार सृजन को प्रोत्साहित करेगी। क्या असंजित संदर्भ में कार्यरत करवों अर्थिकों को भी परिष्कृत में इसके प्रति जोर दिया जा सकेगा।

भारत को रोजगार चुनौती बहुआयामी है। इसलिए समाधान भी बहुआयामी होना चाहिए। केवल वित्तीय प्रोत्साहन पर्याप्त नहीं हो सके, उच्च तक उच्च तक सार्वजनिक निवेश, विनिर्माण विकास, निवेश संघर्ष, तकनीकी नवाचार, सामाजिक सुरक्षा, शिक्षा और श्रम बाजार सुधारों का व्यापक दायें न जुड़ें। यह सभी कारण हैं कि पीएम-वीबीआरवाई को किसी भी समाधान के रूप में नहीं देखा जा सकता।

के रूप में नहीं बल्कि रोजगार पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करने को एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में देखना अधिक उचित होगा। इस योजना का एक उल्लेखनीय आयाम उद्यमिता और रोजगार सृजन के बीच सतृलन स्थापित करना है। अक्सर सार्वजनिक नीतियों या तो कर्मचारियों पर केंद्रित रहती हैं अथवा उद्योगों को राहत देने पर। यहां दोनों पहलुओं को एक साथ जोड़ने का प्रयत्न दिखाई देता है।

अतिरिक्त धर्ती करने वाले निवेशकों को प्रोत्साहन देना इस तरह एक स्वीकार्य विकल्प है कि रोजगार सृजन केवल सरकारी घोषणाओं से नहीं होता बल्कि उद्योग जगत की निवेश क्षमता और विस्तार की दृष्टि पर भी निर्भर करता है। विशेष रूप से विनिर्माण क्षेत्र को अतिरिक्त लाभ प्रदान करना महत्वपूर्ण है, क्योंकि वैश्विक अनुभव बताता है कि बड़े पैमाने पर रोजगार सृजन का सबसे प्रभावी माध्यम श्रम प्रधान विनिर्माण गतिविधियों ही होती हैं। सेवा क्षेत्र अर्थव्यवस्था को गति दे सकता है, लेकिन व्यापक रोजगार का आधार अक्सर उत्पादन क्षेत्र ही बनता है।

वास्तव में विकसित भारत का सपना केवल सफल उत्पाद को बूटि से पूरा नहीं होगा। उसका वास्तविक केंद्र ही यह होगा कि कितने युवाओं को समानानुक्रम रोजगार मिला, कितने परिवार आर्थिक असुरक्ष से बाहर आए, कितनी महिलाओं को कार्यक्षम में अक्सर मिला और कितने श्रमिक सामाजिक सुरक्षा के दायरे में आए। रोजगार केवल आय का स्रोत नहीं होता। वह सामाजिक गतिशीलता का माध्यम भी होता है। वह आत्मविश्वास देता है।



देश के युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराने की दिशा में निरंतर प्रयासरत है सरकार।

खरी-खरी

खरबूजे का रंग बदलना

निमेष कुमार शर्मा

क्यों है खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है? पर अब खरबूजे को देखकर तबूज, खरी, ककड़ी को रंग बदलने लगे हैं। रंगबंदस को रस का ध्यान तब हुआ जब पत्नीसारा टिडली को एक ऊंची बिल्डिंग में काफी ऊपर फेंकना शुरू हो गया। हुआ यूँ कि आग लगने के बाद अलार्म में कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। रिस्कलर सिस्टम भी आराम से सोता था। जैसे ही जैसे सदन में नेता, अधिकार में बाबू सोते रहते हैं। जबकि फ्लैट खरीदने वालों से अलार्म और रिस्कलर सिस्टम के गुणगान करके, वह बता कर कि इस फ्लैट में आग लग ही नहीं सकती, कानों अधिक रकम वसूली जाती है।

अब प्रश्न उठता है कि अलार्म में क्यों अलार्म काम नहीं किया? साथ ही रिस्कलर सिस्टम के अलार्म पर ही रसाल उठता है। तो जबवा यह भी रसाल को अकर्मण्य आलस्यवस्त देखकर ये भी कुछ बैसे हो तो हुए हैं। बिजुट जो समय सीमा देता है खरीदार को पैसेजमें देने के लिए, उस समय क्यों नहीं देता।

कुछ मामलों में बिजुट कुछ इतना किताबों को जाता है कि उसके पास खुद को रिवालिड घोषित करने के अलावा कोई बात नहीं रहता। ऐसे में खरीदार का फ्लैट का रसाल अनिश्चितता के लिए सस्पेंड हो जाता है। खरीदार जानता है कि समय से पैसेजमें देने उद्यम उद्यमिता के अधिकार के खिलाफ है, पर वह भी कुछ विकल्प नहीं करता और प्रभाव पर हाथ धरे निष्क्रिय बैठता रहता है। बहुत देना तो लोगों के समय अपने टुक का रंग न ले लिया। वह भी एक महत्वपूर्ण कारण है बिजुट को कुंभकर्ण नींद का। जो अधिकार अलार्म में विनिर्माण विभागों से जुड़ा है विना कुछ देखा अनर्णित प्रमाण पत्र दे देते हैं। जेन से साइट पर आते भी नहीं हैं। जेन में लक्ष्मी पंचा, बस, ये इन्फ्रिंट हो जाते हैं। ऐसे में इनसे ही सीख मिली अलार्म और रिस्कलर सिस्टम को, आग लगने पर निष्क्रिय पड़े रहने को गमनात नहीं करे, कि अग्निजल विभाग पर से ही खरी, अग्निजल और निसर फ्लैट में आग लगी थी, वह बात ही लौकिक हो गए, पर रोष महत्वपूर्ण साधन भी है।

रोजगार, कौशल और उद्यमिता को प्रोत्साहन

भारत आज विश्व को सबसे युवा आबादी वाले देशों में शामिल है और वहीं जनसंख्यावृद्धि पूंजी उद्योगों में सबसे बड़ी चुनौतियाँ पैदा हो रही हैं। किंतु रोजगार सृजन के गंभीर अध्ययन यह संकेत देता है कि अक्सर अंतर्गत आकांक्षाओं के बीच ही अंधी भी है। एक ओर परिवार शिक्षा पर भारी निवेश कर रहे हैं, दूसरी ओर अक्सर डिग्रियाँ रोजगार में रूपांतरित नहीं हो पा रही हैं। परिणामस्वरूप अनेकानेक युवा वारसातिकाओं के बीच अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि संकेत का दूसरा महत्वपूर्ण आयाम शिक्षा और रोजगार के बीच बढ़ती अपेक्षित सतृलन अभी पूरी तरह स्थिति नहीं हो पाया है। यही कारण है कि भारत का रोजगार विमर्श आज केवल बेरोजगारी तक सीमित नहीं रह चुका है, बल्कि रोजगार की गुणवत्ता, कौशल, डिजिटलता, संचार कौशल और कार्यक्षमता अनुकूलन क्षमता पर भारी निवेश हो रहा है। यही कारण है कि अक्सर उद्योग जगत कौशल अभाव को शिकायत करता है जबकि युवा रोजगार अभाव को।

भारत आज विश्व को सबसे युवा आबादी वाले देशों में शामिल है, जो उच्च शिक्षा प्राप्त युवाओं में बेरोजगारी दर सामान्य औसत से कहीं अधिक दिखाई देती है। यह केवल रोजगार की कमी का प्रश्न नहीं है। यह मानव पूंजी के अपर्याप्त उपयोग का संकेत भी है। एक ओर परिवार शिक्षा पर भारी निवेश कर रहे हैं, दूसरी ओर अक्सर डिग्रियाँ रोजगार में रूपांतरित नहीं हो पा रही हैं। परिणामस्वरूप अनेकानेक युवा वारसातिकाओं के बीच अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि संकेत का दूसरा महत्वपूर्ण आयाम शिक्षा और रोजगार के बीच बढ़ती अपेक्षित सतृलन अभी पूरी तरह स्थिति नहीं हो पाया है। यही कारण है कि भारत का रोजगार विमर्श आज केवल बेरोजगारी तक सीमित नहीं रह चुका है, बल्कि रोजगार की गुणवत्ता, कौशल, डिजिटलता, संचार कौशल और कार्यक्षमता अनुकूलन क्षमता पर भारी निवेश हो रहा है। यही कारण है कि अक्सर उद्योग जगत कौशल अभाव को शिकायत करता है जबकि युवा रोजगार अभाव को।

जबलौसे शोध को है। पिछले वर्षों में सरकल धरलू, उत्पाद में वृद्धि दर्ज हुई है, निवेश बढ़ा है और अनेक क्षेत्रों में विस्तार भी हुआ है, किंतु रोजगार सृजन की गति हमेशा उसी अनुपात में दिखाई नहीं देती। विशेष रूप से उच्च उत्पादकता वाले क्षेत्रों में रोजगार का विस्तार अपेक्षा से कम रहा है। श्रम बाजार का संश्लेषण पर टूट्ट टूट्ट की अनैच्छिक रोजगार का अवधिच प्रभुत्व भी चिंता का विषय है। करोड़ों श्रमिक आज भी ऐसे कार्य में लगे हुए हैं, जहाँ सामाजिक सुरक्षा, पेंशन, स्वास्थ्य बीमा, रोजगार स्थिरता और श्रमिक अधिकारों की पर्याप्त व्यवस्था नहीं है। गिरा अध्ययनका और लोटाटाम आधारित कार्य संस्कृति ने नू अक्सर अवश्य दिए हैं, लेकिन इनके साथ सामाजिक सुरक्षा की नई चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। रोजगार की संख्या वित्तीय महत्वपूर्ण है, रोजगार की गुणवत्ता उसका एक महत्वपूर्ण अंग है। यही अधिक आर्थिक असुरक्ष में जीवन व्यतीत करने को विवश है, तो रोजगार सृजन का उद्देश्य अधुण रह जाता है।

(कैलाश खिरनी)

वह नागरिक भागीदारी को मजबूत करता है। वह लोकतांत्रिक स्थिरता का आधार बनता है। इसलिए पीएम-वीबीआरवाई के अंकड़े रोजगार सृजन योजना के रूप में नहीं बल्कि मानव पूंजी निर्माण, श्रम बाजार आधुनिकीकरण और समावेशी आर्थिक विकास को दिशा में उठाए गए एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में देखा जाना चाहिए। इसकी उपलब्धियों का स्वागत होना चाहिए। इसकी सीमाओं पर गंभीर विमर्श भी होना चाहिए।

श्रम बाजार आधुनिकीकरण और समावेशी आर्थिक विकास को दिशा में उठाए गए एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में देखा जाना चाहिए। इसकी उपलब्धियों का स्वागत होना चाहिए। इसकी सीमाओं पर गंभीर विमर्श भी होना चाहिए।

क्योंकि किसी भी नीति को सबसे बड़ी समस्याओं को अलग प्रसारों से नहीं बल्कि उच्चतर नितरत परिष्कार में निहित होती है। विकसित भारत की यात्रा में रोजगार केवल एक लक्ष्य नहीं है। वहीं सबसे महत्वपूर्ण साधन भी है।

पोर्ट

शिमला समझौते का उद्देश्य हिंसा के दौर को खत्म करना और आसानी से खोजा जा सके। फिर भी पाकिस्तान ने पिछले 50 वर्षों में दौक इसके उलट काम किया है। कश्मीर पर प्रभुत्व फैलाना, निरन्तर रेखा का उल्लंघन करना और आतंकवाद को सरकारी नीति बनाना। शिमल समझौते फेन नहीं हुआ। पाकिस्तान फेल आया-बार-बार।

पाकिस्तान ने 125 साल पुराने मुझदर को लुत्तेउर से मिला दिया गया। यह सिख अरथ, शिखर और शिरात का हमल है। इस प्रतिवन्द को मारते हैं लुत्तेउर कर दिया गया। जो अरथव्यक्त का शिरात रखने को मिलाता बना। लुत्तेउर को लुत्तेउर से मिला और बनाया है।

आदिम मूल्य में डेरा हाथी वि कि संसुमान हिंदुओं के साथ मित्र-जुगुपत नहीं रह सकते, शोषित वे अन्ना-अन्न नसते हैं। अन्नवम किन कारिस के कथित कथन सिद्ध बाकि सिखा की सारस का गम है। भारत द्वारा सिखा तल सिखा पर रथमन से पाकिस्तान लुत्तेउरवा है।

प्रवीर कुमार सिंह @SinghPramo2784



झा खंड को राजनीति हमारे से मध्यस्थ, क्षेत्रीय समीकरण और व्यक्तित्व आधारित नैतिक के इंगित घुमती रही है। हार में संपन्न राज्यसभा चुनाव के परिणामों ने सत्ता पक्ष के भीतर स्वर कुछ सामान्य होने के दावों पर समाल खड़े कर दिए हैं। खासकर कोशिश प्रयास झा की हार के बाद पार्टी के भीतर जिस तरह को बेचैनी दिखाई दे रही है, उसने राजनीतिक गतिधारा में नए समीकरण और संभावित उदय-पतन को चर्चाओं को डबा दे दी है। स्थिति मध्यस्थ सरकार में कोशिश सिद्ध नहीं है। यह कहेंगे बड़ी राजनीतिक जोखिम उठा रहे, क्योंकि उसकी सरकार में भागीदारी काको हद तक मुख्यमंत्री हेमंत सोहन से सफल नैचल और शारखंड मुक्ति मोर्चा (झाम्मो) के साथ तालमेल पर निर्भर है।

सारखंड डायरी

राज्यसभा चुनाव से बाद कांग्रेस के भीतर असंतोष के कई कारण दिखाई देते हैं। पहला कारण पार्टी के संयोजक नैचल और विचारकों के बीच चर्चा की घटती राजनीतिक प्रभावशीलता है। दूसरा कारण मध्यस्थ में कांग्रेस की राजनीति को को बाधनी है, जिन्का अतीत लगातार विवादों से घिरा रहा है। इन परिस्थितियों में पार्टी के भीतर यह संदेश भी दिया है कि राजनीतिक मजबूती कई बाद संयोजक अनुयायन पर थारी पड़ जाती है। पूर्व मंत्री योगेश साव को कोरिस में बाधनी इसी संदर्भ में सबसे अधिक चर्चा का विषय बने हुए हैं। सख शारखंड को राजनीति का एक प्रभावशीलता, लेकिन विवादप्रसंग उभरा रहे हैं। बहुकांगण विधानसभा क्षेत्र में उनका परिवार कौ से मजबूत राजनीतिक कब्जा बनाए हुए है। उनको पत्नी निर्मला देवी विवाहाक रह चुकी हैं और उनको पुत्री अंका प्रसाद के विवाहसभा का प्रतिनिधित्व करना पड़ा है। इस लिहाज से साव परिवार कोरिस के तौर पर लिया और 'गुजरात माडल' के सबसे आसानी से समझ आने वाली जैसी आसानी से समझ आने वाली के विशेषों, नैजवाणों को ऐसे रह गया है कि हर समस्या के समाधान के लिए उसी सूत्र को समाज रहा है। उत्तर प्रदेश से शुरू होकर हरियाणा, महाराष्ट्र, बिहार और अंधा बंगल गल सूत्र के अर्थात् अत्यान्ता परिणाम के साक्षात् उद्घरण बन गया है। हिंदुत्व और विकास के सूत्र को ही नरेन्द्र मोदी ने और सरल करने आधुनिक भारत का नाम दे दिया है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को स्वदेशी अन्वेषण भी तो यही है।

खिसियानी बिल्ली जैसी कांग्रेस की हालत



कोरिस नेता पुर प्रेशे के पूर्व मंत्री योगेश साव आनी बेनी बेटीवी के साथ।

के लिए एक मजबूत राजनीतिक आधार भी है। लेकिन दूसरी ओर, यही परिवार नितर विवादों में भी पर है। कोशिश अन्ना, स्वायंसेवक संघ में टोना और भी विभिन्न प्रदर्शनक मामलों को लेकर उभर पर समय-समय पर आरोप लगते हैं। इसी परिस्थितियों में कोरिस ने पहले कोरिस साव को निर्वाचित किया था। यह संदेश देने की कोशिश की गई थी कि

नई अनुयायन और सार्वजनिक हृदिके सख को समझौता नहीं करेगा। लेकिन कुछ ही समय बाद उनका पुनर्वास कर दिया गया। कोरिस ने स्वयं अपने निर्वाहों की विवरसंभारता पर प्रदर्शित लगा दिया। राजनीति में बाधनी असामान्य नहीं है, लेकिन निरास तोजी से वह निर्णय हुआ, उसका मध्यस्थ सखोणी झाम्मो के भीतर भी असहजता पैदा कर देती है।

मध्यस्थ राजनीति में सखोणी टलों के बीच विचारों सबसे बड़ी पूर्ण होता है। यदि किसी दल का निर्णय दूसरे सखोणी में प्रभाव दिखाई देते हैं, तो उसके दुर्गामी प्रभाव दिखाई देते हैं। हालांकि सार्वजनिक रूप से कोई भी दल सतृलन स्वीकार नहीं करेगा, लेकिन संकेत होते हैं कि टोना टोना के बीच कई मुद्दों पर टूटकोटको अलग है।

इसी बीच कोरिस के बरिष्ठ नेता और पूर्व मंत्री योगेश उरिका का नाम डूँडी को कोरिस में संपने आना कोरिस की चिंता को और बढ़ा देता है। पुलिस सेवा के अधिकारी रहे रामेश्वर उरिका कोरिस के प्रमुख नेताओं में गिने जाते रहे हैं। लेकिन सखर घोटाने से जुड़े मामले में उन्हें और उनके पुत्र गणू से जुड़े घणू समन भेजा जाना गंभीर चिंता का विषय है। कोरिस को सबसे बड़ी चुनौती यह है कि वह इस समय न तो सरकार से अलग होने को स्थिति है और न ही गुजरात के भीतर आन्ध्रमक रह कर अपना सकती है। शारखंड में उसकी

राजनीतिक ताकत इतनी नहीं है कि वह अनेकानेक सत्ता का विस्तार प्रस्तुत कर सके। दूसरी ओर, हेमंत सोहन के नेतृत्व वाली सरकार को भी कोरिस के सखोणी को आवश्यकता है। इसलिए टोना टोना की मजबूती ही फिलहाल मध्यस्थ को सबसे बड़ी मजबूती बने हुए है।

नई राज्यसभा चुनाव के बाद की परिस्थितियों में यह स्थिति क दिशा है कि शारखंड में सत्ता तो फिलहाल स्थिर दिखाई देती है, लेकिन सत्ता के भीतर राजनीतिक असहजता लगातार बढ़ रही है। मध्यस्थ में सखोणी केवल कोरिस के लिए ही नहीं, बल्कि पूर्व सारखंड मध्यस्थ के लिए एक बड़ी राजनीतिक परीक्षा साबित हो सकती है। आने वाले समय में यह उदयन विवरणों से कि कोरिस संयोजक अनुयायन और राजनीतिक मजबूती के बीच किस प्रकार सतृलन स्थापित करती है तथा झाम्मो के साथ अपने सखोणी किस दिशा में ले जाते हैं। यही सतृलन शारखंड की आगामी राजनीतिक क संरूप तय करेगा।

जागरण जन्मत कल का परिणाम

सरता से हिर राम मीरर टूट के टूटिदों के खिलाफ भी एकाडामर सनी बाकिर?



आज का संकलन

पाकिस्तान के शक्तिशाली शुरू करने की यात्रा करके बाले आतंकी अनेकानेक कर रहे हैं।

परिणम जगारा इन्टरनेट संसकका के फलको काम है।

जनपथ

जापेी अद्व नरु में सली घुवारा घोर, परकता अनेक जन्म से सली कर्मो डेरे। सली कर्मो डेरे पुरो कर्मो डेरे, धन धनू जी का उद्यम कर्मो न मुहुरेरे। गोपी जी के राज न ये अब वर जापेी, मुंड पर कालिय जेत पेत में सड़ जापेी।



प्रधामंत्री नरेन्द्र मोदी के तीसरे कार्यकाल के 9 वर्ष पूर्ण हो गए। प्रधानमंत्री पद पर लगभग उल्टे 12 वर्षों का प्रयास करे, 2014 में प्रधानमंत्री बने के बाद 'नेत्र' से नरेन्द्र मोदी को नेहरू के पन्ना 'नेत्र' से लड़ने हुए भारत के विकास की गाथा लिखनी थी। देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने भारत की विकास गाथा धार ले लिखी थी, धले ही भारत का स पूरा तरह से अंग्रेजों की भाषा-भाषा, शिक्षा, पद्धति में विलीन कर दिया, लेकिन एक काम नेहरू ने मौलिक कर दिया कि उन्होंने अपना 'कल्ल' तैयार कर दिया। इस 'कल्ल' के लिए भारत का सव, भारत का न्यायव्य, भारत का विचार, भारत की संस्कृति, भारत का धर्म, भारत की भावना सब सहस्य का विषय थी, क्योंकि इस 'कल्ल' को आज भी लगातार है कि भारत आजात विचार, आजात

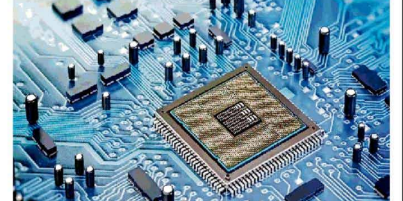
आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के तीसरे कार्यकाल के दो वर्ष पूरे हो चुके हैं। पिछले 12 वर्षों के दौरान उन्होंने ऐसे अनेक निर्णय लिए हैं जो देश को प्रगति के पथ पर तेजी से आगे ले जा रहे हैं

भाषा और आधुनिकी संस्कृति से नेहरू को तरह 'भारत एक खोज' कर सकता है। यही वजह रही कि लंबे समय तक आजात विचार, भाषा और संस्कृति से आह्लादित बर्ग यही माने को तैयार नहीं हुआ कि भारत के स्व को बना करके भारत में पूर्ण बहुमत को राजनीति समकालापूर्वक को जा समकती है। प्रधानमंत्री मोदी ने इसे बड़ी चुनौती के तौर पर लिया और 'गुजरात माडल' जैसी आसानी से समझ आने वाली के विशेषों, नैजवाणों को ऐसे रह गया है कि हर समस्या के समाधान के लिए उसी सूत्र को समाज रहा है। उत्तर प्रदेश से शुरू होकर हरियाणा, महाराष्ट्र, बिहार और अंधा बंगल गल सूत्र के अर्थात् अत्यान्ता परिणाम के साक्षात् उद्घरण बन गया है। हिंदुत्व और विकास के सूत्र को ही नरेन्द्र मोदी ने और सरल करने आधुनिक भारत का नाम दे दिया है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को स्वदेशी अन्वेषण भी तो यही है।

भाषाओं से विद्वते वाली जमाना मोदी से भयानक नरस्त करती है, क्योंकि जिसकी सखी को लोले जलाना भी तो यही था, लेकिन देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू को सरकार गौधी जी के विचारों के ठीक उलट चल पड़ी। देश का सब धूल-धूसरित करने अंग्रेजीवाद नेहरू ने देश को भाव हीन कर दिया। उसी का एक प्रमाण था तत्कालीन राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसद को सोमनाथ मंदिर के पुनरुद्धार कार्यक्रम में अयोध्या में श्रीराम मंदिर पर धर्म ध्वजा फहरा रही है। कशीर विध्वंसक धाम से कलकत्ता पर्यटन संपन्न होते तक कोरिस भारत के बैचक का दर्शन कर रहा है। हिंदू शोध टेर अर्थ विव्यवस्था को, विकास के सूत्र को ही नरेन्द्र मोदी ने और सरल करने आधुनिक भारत का नाम दे दिया है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को स्वदेशी अन्वेषण भी तो यही है।

गौधी जी भी इसी स्वदेशी को बात करती थे। स्वतंत्रता आंदोलन में विदेशी सखी को लोले जलाना भी तो यही था, लेकिन देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू को सरकार गौधी जी के विचारों के ठीक उलट चल पड़ी। देश का सब धूल-धूसरित करने अंग्रेजीवाद नेहरू ने देश को भाव हीन कर दिया। उसी का एक प्रमाण था तत्कालीन राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसद को सोमनाथ मंदिर के पुनरुद्धार कार्यक्रम में अयोध्या में श्रीराम मंदिर पर धर्म ध्वजा फहरा रही है। कशीर विध्वंसक धाम से कलकत्ता पर्यटन संपन्न होते तक कोरिस भारत के बैचक का दर्शन कर रहा है। हिंदू शोध टेर अर्थ विव्यवस्था को, विकास के सूत्र को ही नरेन्द्र मोदी ने और सरल करने आधुनिक भारत का नाम दे दिया है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को स्वदेशी अन्वेषण भी तो यही है।



सेमीकंडक्टर सेमीअनेक तकनीकी परसुओं के उत्पादन में अग्रो बढ़ रहा है भारत।

विश्व के अग्रणी देशों से मुकाबला करने में आ गया है। भारत में मोबाइल निर्माण छल करेड से लगभग साईं पंच गुना बढ़कर 33 करोड़ प्रति वर्ष से अधिक, 11 करोड़ रू शौचालय, ईंधन चालिग रदेशन 25 हजार से अधिक, हर घर बिजली पहुंच गई, चार करोड़ पक्के घर गंधीवों के लिए बन गए, सौर उर्जा 42 गुना बढ़कर 110 गीगावट से अधिक, गैस आधारित 15 हजार किमीमीटर से बढ़कर 25 हजार किमीमीटर से अधिक, प्लास्मोनी 2 लाख से बढ़कर पैंने दो करोड़ घंटे का पूरुण गया, एम्ससेस लगभग सात गुना, हवाई अड्डे ढाई गुना और बंदरगाह साईं तीन गुना बढ़ गए। अपनी पहचान करने में सफल भारत को यह विकास करने में

देश को अब अपनी शक्ति का अहसस हो गया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश में स्वयं का भाव जगाया है। भारत को सही मायने में पहचान कराई है। प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के पास यह आसन विश्वव्यापी था, जिसे उन्होंने छोड़ दिया और देश को अंग्रेजी शासन पद्धति को ही विकार दिया। अंधी भी उसी पूर्ण तरह से उदाहरण दिया जा सके है। लेकिन मोदी ने उस दिशा में बहुत देना ही से काम किया है। इसी गति से देश दिशा में सुदुरी रहे तो भारत का विश्व गुरु होन शक्तिशाली का नरें, वर्तमान का प्रतिक हो जाएगा।

संवेस 77,502.12 ▲ 579.48

निफ्टी 24,175.70 ▲ 189.85

सोना ₹ 1,47,500 ▲ 3,000

चांदी ₹ 2,40,000 ▲ 5,000

डॉलर ₹ 95.35 ▲ 0.19

रुद्र प्रति बैलत \$ 70.53

पश्चिम एशिया संघर्ष के बीच भारत की आयातित तेल पर निर्भरता घटी

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली: एसओआइ को एक रिपोर्ट के मुताबिक आयातित तेल पर देश की निर्भरता पिछले एक दशक में काफी कम हुई है, जिससे वैश्विक उथल-पुथल को भी कम अर्थव्यवस्था का प्रतिकूल प्रभाव हो रहा है। रिपोर्ट में कहा गया है कि वित्त वर्ष 2014 में तेल खपत का जीडीपी से अनुपात 1.4 प्रतिशत था, जो वित्त वर्ष 2026 में घटकर 0.7 प्रतिशत रह गया है। इससे तरह-तरह के अभाव के आयात का जोखिम से अनुपात वित्त वर्ष 2014 में 8.6 प्रतिशत था, जो वित्त वर्ष 2026 में घटकर 3.1 प्रतिशत रह गया है। इसकी वजह वित्त एक दशक में कृषि क्षेत्र में डीजल पंपों की जगह सौर ऊर्जा संयंत्रों की बढ़ती मांग को देखकर है। शहरों में मेट्रो नेटवर्क का विकास, उद्योगों द्वारा नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों पर निर्भरता



बढ़ना और इलेक्ट्रिक वाहनों की विक्री में तेजी है। कृषि क्षेत्र में हाई स्प्रीड डीजल (एक्सस्ट्रीम) की खपत अब कुल

25 लाख से ज्यादा रह सकता है कुल डीजी पीजीकरण परिणाम पश्चिम आसियान क्षेत्र के बाद भारतीय को यातायात के लिए सबसे अधिक तेल की मांग है। पिछले वर्ष प्रतिमाह 1.3 लाख डीजी पीजीकरण होता था, लेकिन मार्च से जून, 2026 के बीच यह औसत बढ़कर 2.3 लाख प्रति माह हो गया। वर्तमान दर से 2026 में कुल डीजी पीजीकरण 25 लाख के आंकड़े को पार कर सकता है। कुल गहन डीजीकरण में डीजी पीजीकरण 2024 में दो प्रतिशत से कम थी, जो 2026 में आठ प्रतिशत से अधिक हो गई है। कुल गहन डीजीकरण 10 प्रतिशत से भी ज्यादा बढ़ सकता है। तेल पर निर्भरता कम होने को उल्लेख करते हुए मई 2026 में तेल की खपत में प्रसार: 3.8 प्रतिशत और 6.5 प्रतिशत की गिरावट से भी मिलता है। यह आंकड़े सुनते ही कारगर नहीं है क्योंकि इस दौरान वाहन, दोपहिया वाहन, ट्रैक्टर, ट्रैक्टर, निर्यात, कार्गो ट्रैकिंग, जीएस्टी-वी-विल और बैकिंग जैसे उच्च प्रमुख आर्थिक सेक्टर मजबूत हो गए हैं।

खपत का केवल 4.7 प्रतिशत रह गई है। कारण यह है कि तेल सरकार ने कृषि क्षेत्र में सौर ऊर्जा से संयोजित सिंगल फेज के प्रयोग को बढ़ाने के लिए योजना शुरू की है। साथ ही शहरों में मेट्रो परिवहन का प्रचलन भी तेजी से बढ़ा है। 1,143 किलोमीटर हो चुका है। उद्योग क्षेत्र में नवीकरणीय ऊर्जा

नेटवर्क सिर्फ 248 किलोमीटर था, वहीं अब 29 शहरों में यह बढ़कर 1,143 किलोमीटर हो चुका है। उद्योग क्षेत्र में नवीकरणीय ऊर्जा को हिस्सेदारी 2026 तक 40 प्रतिशत (2021 गैंगवाट) पहुंच गई है, जबकि कुल स्थापित बिजली क्षमता 521 गैंगवाट है।

तीव्र करने, फास्ट चांजिंग सुविधाओं को बढ़ावा देने के लिए वित्त वर्ष 2025 में 2.86 करोड़ वाहनों का पीजीकरण हुआ और उसके 2030 तक वार करोड़ तक पहुंचने का अनुमान है। इस समय भारत में डीजी पीजीकरण 20 प्रतिशत के आसपास रहने का अनुमान है। इस तरह 2027 से 2030 के बीच 35 लाख डीजी पीजीकरण की जगह लेगे। वहीं डीजी पीजीकरण 20 प्रतिशत तक पहुंच जाते हैं तो 2030 तक आयात विल में एक लाख करोड़ रुपये की बचत हो सकती है। डीजी पीजीकरण को और मजबूत करने के लिए एएसओआइ रिपोर्ट ने एक लाख डीजी पीजीकरण



को हिस्सेदारी 2026 तक 40 प्रतिशत (2021 गैंगवाट) पहुंच गई है, जबकि कुल स्थापित बिजली क्षमता 521 गैंगवाट है।

स्वैच्छिक होगा पीएफ में 1,800 रुपये से ज्यादा का योगदान

कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईबीएफओ) ने अपनी 'कर्मचारी भविष्य निधि योजना 2025' को जगह नई डीपीएफ स्कीम 2026 को लागू कर दिया है। नई स्कीम में सरकारी अंश बढ़कर 12 प्रतिशत और स्वैच्छिक योगदान 1,800 रुपये प्रति माह की वृद्धि कर दिया गया है। इससे कुल योगदान में 1,800 रुपये से अधिक अंतर आने का अर्थ है कि कर्मचारी अपने योगदान को अधिक बढ़ा सकते हैं। इससे कुल योगदान में 1,800 रुपये से अधिक अंतर आने का अर्थ है कि कर्मचारी अपने योगदान को अधिक बढ़ा सकते हैं। इससे कुल योगदान में 1,800 रुपये से अधिक अंतर आने का अर्थ है कि कर्मचारी अपने योगदान को अधिक बढ़ा सकते हैं।

- 12** महीने की सेवा के बाद आंशिक निफ्टी की जा सकती है
- 12-12** प्रस्ताव का योगदान पहले की तरह दोर रहने में निवेशक और कर्मचारी
- 25** प्रस्ताव वॉलेंट बनाए रखना होगा कर्मचारी को अपने पीएफ खातों में

अनिवार्य योगदान को 1,800 रुपये पर बढकर रखना
यूक ईपीएफओ ने अनिवार्य पीएफ योगदान के रूप में 1,800 रुपये की सीमा को बढकर रखा है, इसलिए एक लाख रुपये प्रति माह का मूल वेतन पाने वाले कर्मचारी को भी डीपीएफ के तहत भविष्य निधि में सिर्फ 1,800 रुपये का अनिवार्य योगदान देना होगा। अगर कर्मचारी सेवानिवृत्ति के लिए अधिक बचत करना चाहते हैं तो वे इस अनिवार्य योगदान से अधिक योगदान कर सकते हैं, लेकिन इसकी स्वैच्छिक मात्रा जगह पर निर्भर करेगी।

पीएफ से निफ्टी की केंटेजी घटाकर तीन की गई
पीएफ में जमा पैसे की निफ्टी से लिफ्ट फ्लेस से तब 13 श्रेणियों को घटाकर तीन तक सीमित कर दिया गया है। इससे सरकारी निफ्टी में पर या घटे हुए निफ्टी, निफ्टी के लिए खर्च खरीदना, पर कर्मचारी को अपने पीएफ खातों में 1,800 रुपये से अधिक अंतर आने का अर्थ है कि कर्मचारी अपने योगदान को अधिक बढ़ा सकते हैं।

हफ्तिसंग नवन योजना और सरभसा या सुकरा वार का प्रस्ताव शामिल है।
वैश्वीय और शादी से संबंधित खर्चों को पूरा करने के लिए योगदान से 100 प्रतिशत तक आंशिक रूप से निफ्टी से अनुमति है।

दावों का 20 दिन में निफ्टीदार नही करने पर कटेगा वेतन
नए नियमों में भविष्य निधि निफ्टी, पेशान वेतन भीमा संबंधी दावों का 20 दिन के भीतर निफ्टी नहीं करने पर 20 प्रतिशत की दर से निफ्टी दायता का प्रस्ताव किया गया है। इसे अनुमति के वेतन से दावों का प्रस्ताव दिया गया है। इसे अनुमति के वेतन से दावों का प्रस्ताव दिया गया है। इसे अनुमति के वेतन से दावों का प्रस्ताव दिया गया है।

एक नजर में

सौदा 3,000 रुपये बढ़ा, चीन 5,000 मजबूत हुई

नई दिल्ली: अंतरराष्ट्रीय बाजारों में मजबूत रुझान और कर्मजोर खबर के चलते दो दिनों की गिरावट के बाद सोने की 3,000 रुपये बढ़कर 1,47,500 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गई। चांदी की कीमतों में लगातार तीसरे सत्र में तेजी जारी रही और यह 5,000 रुपये बढ़कर 2,40,000 रुपये प्रति किलोग्राम हो गई। एशियाई बाजारों में वॉल्यूम बढ़ते हुए सोने की कीमतों में तेजी आई। अंतरराष्ट्रीय बाजारों में वॉल्यूम बढ़ते हुए सोने की कीमतों में तेजी आई। अंतरराष्ट्रीय बाजारों में वॉल्यूम बढ़ते हुए सोने की कीमतों में तेजी आई।

फिलहाल अस्तंते नहीं होंगे पेट्रोल और डीजल

पेट्रोलियम मंत्री हरदीप पुरी ने कहा- कच्चे तेल की कीमतों में तेजी नहीं महीने कम रहें तो घट सकते हैं दाम

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली: सरकार की तेल मंत्रालय के कर्मियों (ओएसएस) का अभी पेट्रोल और डीजल की खपत कर्मियों में कटौती का कोई इरादा नहीं है। हालांकि, जिस तरह से अंतरराष्ट्रीय बाजारों में कच्चे तेल की कीमतों में तेजी आई है और अगर ऐसी ही स्थिति कुछ महीने और बढ़ने रहती है तो पेट्रोल-डीजल की खपत कर्मियों में घटाना संभव है। इस बात का संकेत पेट्रोलियम और प्रकृतिक गैस मंत्री हरदीप पुरी ने दिए हैं। उन्होंने कहा कि पुरी ने विभिन्न तेल कंपनियों के साथ बैठक कर पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कटौती के लिए बातचीत कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि पुरी ने विभिन्न तेल कंपनियों के साथ बैठक कर पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कटौती के लिए बातचीत कर रहे हैं।

अंतरराष्ट्रीय बाजार में कूड़ की कीमतें 120 डॉलर से घटकर 70 डॉलर प्रति बैल पर
भारतीय तेल बरकट की कीमत भी एक जुलाई को करीब 68 डॉलर प्रति बैल रहने



नई दिल्ली में गुजरात को प्रेरणार्थक को संबोधित करते केंद्रीय पेट्रोलियम मंत्री हरदीप पुरी पुरी एएनआइ

फिलहाल कंपनियों के पास महंगे कूड़ का स्टॉक
केंद्रीय मंत्री ने साफ कहा कि अभी सरकार तेल कंपनियों को पास कच्चे तेल का जो स्टॉक है, वह जो-वहां महीने बचाने है। यानी कि यह उस समय का है जब कूड़ की कीमतें ज्यादा थीं। यानी कूड़ की कीमतें अभी भी कम कीमतें रहती हैं तो पेट्रोल-डीजल की कीमतों को कम करने के बारे में सोचना संभव है। दूसरे शब्दों में कच्चे तेल के फिलहाल सरकारी कंपनियों कीमतों में कोई बढावा नहीं करने जा रहे हैं और स्थिति पर नजर बचाए हुए हैं। हालांकि पीछे एक बड़ा खर्च भी है कि भारत में सरकारी तेल कंपनियों ने तेलें समय तक (पश्चिम एशिया के दौरान खपत तेल पर) जगह से कम कोमत पर पेट्रोल उतारने की योजना की घोषणा की है। अभी भी तेल कंपनियों अंतराष्ट्रीय (यानी लगत से कम कीमत पर उतार देना) की स्थिति में है, क्योंकि अभी बाहरी को जो तेल दिया जा रहा है वह पुरी में महीने कीमत पर खरीदे हुए कूड़ से तैयार किया गया है।

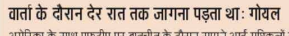
जून तिमाही में कंपनियों को पेट्रोल-डीजल पर 74,000 करोड़ का नुकसान
मार्च से मई 2026 के बीच पेट्रोल, डीजल और एलपीजी पर तेल कंपनियों को कुल अंतर-रिफररी का अंशक करीब एक लाख करोड़ रुपये के आसपास घुसका हुआ है। जून तिमाही में भी पेट्रोल-डीजल पर 74,000 करोड़ रुपये के नुकसान का अनुमान लगाया जा रहा है। ऐसे में मार्च से मई 2026 के बीच पेट्रोल, डीजल और एलपीजी पर तेल कंपनियों को कुल अंतर-रिफररी का अंशक करीब एक लाख करोड़ रुपये के आसपास घुसका हुआ है।

1000 करोड़ का आइपीओ लाएगी स्वरा वेदी प्रोडक्ट्स
नई दिल्ली: गैंगवाट पर आधारित कर्मचारी भविष्य निधि द्वारा स्वरा वेदी प्रोडक्ट्स एक हजार करोड़ रुपये का आंशिक सार्वजनिक निधि (आइपीओ) लाने की योजना बना रही है। इसके लिए कंपनी ने गुजरात को परीक्षा देखावत जमा किया। आइपीओ में 500 करोड़ रुपये के नए शेयर और 500 करोड़ रुपये के प्रोबिड शेयर विक्री के लिए पेश किए जायेंगे। दूसरी ओर, रासरी की खपत वित्तिय कर्मियों रासरीय रिटेल लिमिटेड ने भी आइपीओ के लिए मामला देखावत जमा किए हैं। आइपीओ में 400 करोड़ रुपये के नए शेयर और 1.49 करोड़ प्रोबिड शेयर विक्री के लिए पेश किए जायेंगे। (प्र)

अमेरिका से एफटीए पर वार्ता अंतिम चरण में

नई दिल्ली: आर्थिक मामलों के विभाग के अंतर्गत मंत्री गिरिश सोहन ने गुजरात को बहाक-अमेरिका द्विपक्षीय व्यापार समझौते (डीटीए) पर बातचीत अंतिम चरण में और व्यापार अंशक मुक्त को सुलझा लिया गया है। अब दोनों पक्ष एक ऐसे समझौते पर काम कर रहे हैं, जिससे भारत को अपने प्रतिस्पर्धियों के मुकाबले बड़ा फायदा मिले।

वॉल्यूम और उद्योग मंत्री गिरिश सोहन ने कहा- व्यापारिक अंशक मुक्त को सुलझा लिया
अब दोनों पक्ष एक ऐसे समझौते पर काम कर रहे हैं, जिससे भारत को बड़ा फायदा मिले



गिरिश सोहन को दूरदर्शन में साक्षात्कार

वार्ता के साथ देर रात तक जगना पड़ता था: गौरव
अमेरिका के दौरे पर वाणिज्य के दौरान समझौते अंशक मुक्त के बारे में गौरव ने कहा कि कभी-कभी हमें देर रात तक जगना पड़ता था। मीडिया से मुलाक़ात होते हुए गौरव ने कहा, आइपीओ है कि मैं बहुत देर से सोता हूँ, इसलिए मेरे लिए यह बहुत मुश्किल बन गया है। मेरे स्टॉफ और टीम को शावर छोड़ें परेशानी हुई होगी क्योंकि साक्षात्कार अंशक मुक्त के बाद रात तक चलाता था। मैं बहुत देर तक जागता हूँ।

जून 2025 में विजिली क्षेत्र को 4.85 करोड़ डन रही है। परमाणु गैस में चीन के दौरान विजिली क्षेत्र की मांग बढ़ने का प्रमुख योगदान रहा है। जून 2025 में विजिली क्षेत्र को 4.85 करोड़ डन रही है। परमाणु गैस में चीन के दौरान विजिली क्षेत्र की मांग बढ़ने का प्रमुख योगदान रहा है। जून 2025 में विजिली क्षेत्र को 4.85 करोड़ डन रही है। परमाणु गैस में चीन के दौरान विजिली क्षेत्र की मांग बढ़ने का प्रमुख योगदान रहा है।

केंद्र के एटीएफ सॉल्विडी कार्यक्रम में शामिल नहीं हुईं कोई विमानन कंपनी

नई दिल्ली: एटीएफ सॉल्विडी कार्यक्रम में शामिल नहीं हुईं कोई विमानन कंपनी। एटीएफ सॉल्विडी कार्यक्रम में शामिल नहीं हुईं कोई विमानन कंपनी। एटीएफ सॉल्विडी कार्यक्रम में शामिल नहीं हुईं कोई विमानन कंपनी। एटीएफ सॉल्विडी कार्यक्रम में शामिल नहीं हुईं कोई विमानन कंपनी।

केंद्रीय परिवहन मंत्रालय ने पिछले महीने सरकारी तेल कंपनियों को एयरलाइंस को तेल कीमतों पर तीन साल तक एटीएफ बेचने के लिए सॉल्विडी देने वाली 10,000 करोड़ रुपये के कार्यक्रम में शामिल नहीं किया। इसका उद्देश्य परमाणु पुरिफायर संकट को बचाने के लिए है।

लाभानुसार यह है और अनुमान रहेगा। उन्होंने कहा कि अमेरिका-भारत व्यापार समझौते (एफटीए) 15 जुलाई को लागू होगा, जिससे भारतीय निर्यातकों के लिए नए अवसर खुलेंगे।

आइटी शेयरों में खरीदारी से लगातार दूसरे दिन बढ़े वाजार

मुंबई: स्थानिक शेयर बाजारों में दूसरे को लगातार दूसरे दिन तेजी जारी रही और टैनी मानक सूचकांक लाभ में 100 के दाय में गिरावट, बैचिक स्तर पर सकारात्मक घटनाक्रम और सूचना-प्रौद्योगिकी (आईटी) क्षेत्रों की शेयरों में लिक्विडिटी से बंधाई सेसरेस 579.48 अंक बढ़कर 77,502.12 पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान, एक समय यह 656.29 अंक चढ़कर 77,578.93 अंक पर पहुंच गया था। वहीं निफ्टी 169.85 अंक की तेजी के साथ 24,175.70 पर बंद हुआ। बैचिक तेल बाजार में 1.45 प्रतिशत ट्रेडकर 70.53 डॉलर प्रति बैल पर रहा।

विदेशी निवेशकों ने जून में शेयर बाजार से 49,430 करोड़ रुपये निकाले

नई दिल्ली: विदेशी निवेशकों ने जून में विदेशी निवेशकों ने जून में शेयर बाजार से 49,430 करोड़ रुपये निकाले। विदेशी निवेशकों ने जून में शेयर बाजार से 49,430 करोड़ रुपये निकाले। विदेशी निवेशकों ने जून में शेयर बाजार से 49,430 करोड़ रुपये निकाले।

शेयर 5.64 प्रतिशत बढ़ा। इसके बाद क्रमशः टेक स्टॉक (4.32 प्रतिशत), टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेस (4.28 प्रतिशत) और एएसओआइ (4.12 प्रतिशत) का स्थान रहा। बजाज फिनसेव, अटॉमी पीटर्स, टाटा इलेक्ट्रिक, कार्तेर, अर्बन कौमोर्सिंग के जॉयंट सुनवाई में शामिल हो सकते हैं। आठों को प्रति भी बंधे बड़े प्राय का सकते हैं। इस तरह ई-जागृति उपभोक्ताओं के लिए डिजिटल अदालत बन चुकी है। अपने बढाव के लिए उपभोक्ता मामलों के विभाग की इस पहल को देखते हुए ई-गवर्नेंस प्रकल्प 2026 में रजत पुस्तक मिला है। यह पुस्तक गुजरात को 22,615 करोड़ रुपये का नुकसान का बहाना है।

एअर इंडिया ने उत्तरी अमेरिका, यूरोप की उड़ानों के लिए फ्यूअल संचर्जन घटाया

नई दिल्ली: एअर इंडिया ने उत्तरी अमेरिका, आस्ट्रेलिया, यूरोप और ब्रिटेन जाने वाली उड़ानों के लिए फ्यूअल संचर्जन अंशक कर दिया है। एयरलाइन ने सारा अंशक कर पुरिफायर में चले रहे ट्रेडकर को बचाने से तेल और डीजल की कीमतों में बढ़ती हुई के बीच फ्यूअल संचर्जन की घटोत्तम को धीमे धीमे अधिक लागत और एयरसेस पर धीमा पारिधि के कारण एयरलाइन का आर्थिक स्थिति खराब हो गया है।

हाल के हफ्तों में वैश्विक बाजार में तेल की कीमतें कम होने से उछाला गया कम
लागू है। एअर इंडिया की ओर से कोई दिशानिर्देश नहीं है। अंतरराष्ट्रीय उड़ानों और घरेलू उड़ानों के लिए फ्यूअल संचर्जन में कोई बढावा नहीं किया गया है। उत्तरी अमेरिका, आस्ट्रेलिया, यूरोप और ब्रिटेन की उड़ानों के लिए फ्यूअल संचर्जन 10 प्रतिशत से घटा दिया गया है। इस अंशक को एअर इंडिया समूह ने कुछ खास रूप से छोड़कर अंतरराष्ट्रीय उड़ानों के लिए 24 से 280 अंशक की उड़ान और घरेलू उड़ानों के लिए 299 से 899 रुपये के फ्यूअल संचर्जन का प्रदान किया है। परंतु पुरिफायर ट्रेडिंग फ्यूअल की कीमतों में वृद्धि 25% तक सीमित करने के सकार के फैसले के बाद समूह ने बचत का अंशक किया है।

ईयू कोर्ट ने एंटी-ट्रस्ट मामले में गूगल पर बरकरार रखा 4.1 अरब यूरो का जुर्माना

ब्रसेल्स: अल्फाबेट की कंपनी गूगल को यूरोप में रिबर्ट ईयू एंटी-ट्रस्ट जुर्माने के मामले में अंशक से 'जल शी कांनूनी लाइवई में गुजरात को हर का समान कर दिया। यूरोपीय युनियन (ईयू) को अंशक अदालत ने कंपनी पर लगाए गए 4.1 अरब यूरो के जुर्माने को बरकरार रखा है। इस पर अपने पेशकश ऑपॉसिटि सिस्टम का इस्तेमाल करके प्रतिस्पर्धियों को नुकसान पहुंचाने का आरोप लगाया गया था।

गूगल को आठ वर्ष से चल रही कामूनी जुर्माने में हर का कर्मचारी परमाणु लाइवई चलाती रही।
आयोग ने पेशकश मामले में 2018 में जुर्माने लगाया था। इससे एक साल पहले गूगल पर 2.42 अरब यूरो का जुर्माना लगाया था, क्योंकि उसने अपनी शॉपिंग प्लेन सेवा का इस्तेमाल करके छोटे प्रतिस्पर्धियों के मुकाबले अनुचित लाभ उठाया था।

ई-जागृति प्लेटफार्म नवी उपभोक्ताओं की डिजिटल अदालत

उपभोक्ता आयोगों में न्यून पाठ की प्रक्रिया के डिजिटल बनने वाली ई-जागृति ने शिकायतों के निपटारे का तरीका बदल दिया है।

शिकायत करने से लेकर फैसले तक पूरी प्रक्रिया 24 घण्टे में समाप्त
गया, जिसे उपभोक्ता मामलों की सचिव निधि चले ने प्राप्त किया। एक जनवरी, 2025 से प्रभावी इस प्लेटफार्म ने उपभोक्ता आयोगों को पार अलग-अलग डिजिटल प्रणालियों को एकजुट कर व्यापक-कम और पूरी तरह परिलक्षित कर रहे देखा दिया है। प्लेटफार्म में ओटीपी आधारित फॉर्मिकर, बहामाई इंटरफेस, एअर और मशीन लिंगिंग सेवाएं, एअर, चैटबॉट, न्याय-टू-गैटस्ट प्रक्रिया, आनलाइन पुरिफायर, परमाणुपूरक और वीडियो-इ-गवर्नेंस प्रकल्प 2026 में रजत पुस्तक मिला है। यह पुस्तक गुजरात को 22,615 करोड़ रुपये का नुकसान का बहाना है।

राष्ट्रीय फलक

ज्येष्ठ नागरिकांसाठी आनंदवादी सावली शोधणारे झार

नया दौर

'रोबो अँड फ्रँक' - आजोबांच्या सोबतीला रोबो.

विस्मरणाचा आजार जडलेल्या फ्रँक नावाच्या सररीच्या आजोबांना सोबत म्हणून त्यांचा मुलगा एका रोबोला घरी घेऊन येतो. पुढे ते दोघे मिळून काय घडाले करतात?



चित्रपटातले 'उद्योगी' म्हातारे शोधताना 'रोबो अँड फ्रँक' हा एका वेगळ्याच गोष्टीवरचा चित्रपट पाहण्याला मिळाला. चित्रपटाची गोष्ट कल्पनिक विज्ञानकथा म्हणूनती अशी. पाण कार अवयव नाही. भविष्यात - आम्ही दोन-चार वर्षांतचुद्धा - खरंच घडू शकते अशी. गोष्ट वेगळी कारण उतरावयात चोरी करणारा म्हातारा त्यात भेटतो.

फ्रँक नावाचा हा सररीच्या आसपासचा माणूस घरात एकटा राहात आहे. अमेरिकी पद्धतीचे दोन मजली घर, आसपास पुष्कळ जगात, त्या फ्रँकला विस्मरणाचा आजार आहे. काही गोष्टी घर पुरल्या गेल्या आहेत. काही येत-जात राहतात. मुलं मात्र आठवतात. मुलगी जगभर प्रवास करत आहे. मुलगा नोकरीदार, कुटुंबावरून आहे; पाण पाच-सातशे मील दूर असल्याचा शहरात राहतो. तरीही तर आठवण्याला वडिलांची चौकशी करायला येतो. पण वडिलांचा विविधपणा वाढत गेल्यावर आता त्यांना चोवीस तास देखरेखीची गरज आहे. हे तिच्या लक्षात येते. फ्रँकला अर्थातच ते मान्य नाही. 'मला काहीही झालेलं नाही, मला कुणाची गरज नाही.' हा त्याचा धोखा आहेच. पण तरीही मुलगा त्याच्या मदतीसाठी एक रोबो घेऊन येतो.

या रोबोमध्ये फ्रँकच्या तब्येतीविषयी, त्याच्या दिनक्रमविषयी, त्याची काय काय कामे करायची, ही सगळी माहिती भरलेली आहे. आधी फ्रँकला रोबो अजिबात आवडत नाही, पण हळूहळू त्याची सवय होते, त्याचा उपयोग पडतो.

त्याची कंपनी आवडायला लागते. मानवी मदतीसाठी काही वेळाही चांगला, असं त्याला वाटायला लागतं. फ्रँकची तब्येत सांभाळणे हेच रोबोचं मुख्य काम असल्याचे एक दिवस रोबो त्याला सल्ला देतो, "तुझ्या कुडीला चालना मिळेल असं काहीतरी तू कर. म्हणजे तुझा वेळ चोचाला जाईल आणि विस्मरणाच्या आजारालाही थोडा आळा बसेल."

फ्रँक असतो पूर्वाश्रमीचा दागिने चोर. डोक्याला चालना घ्यायचं म्हणजे त्याला जे काम मनापासून आवडायचं त्याच्या आठवणीत रम्याचे, तो रोबोला कुळाचं कशी उघडायची, एखाद्या ठिकाणाचा नकाशा कसा अभ्यासायचा, तिथल्या सुरक्षा रेंवणा कशा भेदायच्या, हे सांगण्याला लागतो. रोबो फक्त दिलेली माहिती साठवून ठेवू शकतो.

फ्रँकला गावातल्या ग्रंथालयातली ग्रंथपाल जेनिफर आवडत असते. पण एका धनदांड्याच्या आणि तणावनाला आजवली महत्त्व देणाऱ्या माणसाने ग्रंथालयावर कब्जा मिळवून ते सगळं डिजिटल करायचा, सगळी छापीणी पुस्तके नाहीशी करायचा वाद घालला आहे. त्याने एक रोबोची ग्रंथपाल म्हणून नेमणूक केली आहे. हे कळवताना फ्रँकला राग येतो. जेनिफरसाठी काहीतरी करावं म्हणून तो रोबोच्या मदतीने राजीव्या ठेकी ग्रंथालयात शिरून जेनिफरच्या आवडीची कादंबरी चोरतो आणि नंतर ती तिचा भेट म्हणून देतो.

त्या माणसामुळे जुनं सगळं बदलत आहे, असं फ्रँकला वाटतं. त्यामुळे त्याच्या बायकोचे घसघशीत दागिने चोरायचे, असं फ्रँक ठरवतो. दागिने चोरण्याबद्दल फ्रँकला अजिबात अपराधी वाटत नसतं. त्याच्या मते ज्याचे दागिने चोरलीना जाताना त्यांना विना कसब्याकडून भरपाय मिळाली आणि विमा कंपनी त्यांही लोकांना लुटूनच श्रीमंत झाल्याचा असताना दागिने चोरिचं नेमिजण करणायत, रोबोला ते शिकवण्यात त्याचा कारवाय वेळो वेळी. त्यात त्याचं मन रमलं, आळस दूर होतो, तरतरी येते. मुलांकडे तक्रारी करणायचं प्रमाणीची कमी होतं. फ्रँक आणि रोबो ते दागिने चोरतात. पण त्या माणसाला फ्रँकचा इतिहास माहीत असल्याने त्याला फ्रँकचा संशय येतो. तो पोलिसांना घेऊन त्याच्या मंगल लागतो. रोबोमध्ये सगळं रेकॉर्ड झालेलं असल्याने त्याची हाई डिजिटल मिळाली तर फ्रँकचा मुक्ता सिद्ध होईल, हे लक्षात आल्याने रोबो स्वतःच फ्रँकला त्याची मेमरी पुरवून टाकण्याचा सल्ला देतो. फ्रँकला तो सल्ला अजिबात पटत नाही. पण स्वतःला वाचवण्याचं तर तसं करायलाचुद्धा दुसरा पर्याय नसतो. उड अंतःकरणाने तो रोबोची मेमरी पुरवून टाकतो आणि मग बुद्धाश्रमात राहायला जातो.

- उज्वला बर्बे,
माधव अभ्यासक,
ujwalabarb@gmail.com

आज्जींच्या हाती आयता चहा का? कशाला? ...अजिबात नको!

घरातल्या वृद्ध माणसांना झेपतील ती कामे त्यांना अवश्य करू द्या. सगळ्या कामातून वगळले जाणे म्हणजे घरातून दूर होणे! त्यात आरामापेक्षा वेदनाच वाटायला येतात.

सत्तर वर्षांच्या सासुबाईंना आम्ही अगदी सुखदा देवतो. चहाचा कपही हातात नेऊन देतो. आम्ही भाजी निघडायचीही काम कधी सांगत नाही. त्या त्यांच्या खोलीत भरपूर आराम करतात. दिवसभर मालिका पाहतात. आमची त्याविषयी काही तक्रारही नाही. त्यांच्या मानप्रमाणे सगळं काही होतं, तरी त्या येणा-या-जाणाऱ्याकडे आमच्याविषयी तक्रार करतात. आपल्याला बुद्धाश्रमात सोड, असं अपेक्षा असू शकते. भाजीसुद्धा निघडणार नाही, हेही तिने ठणकावून सांगितलं असेल. सुनेनेही हे सुख तिला दिलं असेल.

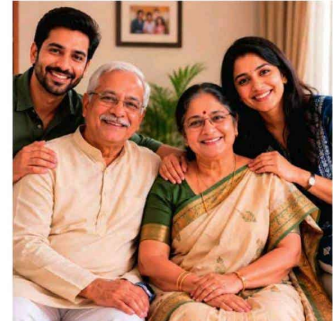
एक गृहीत धरू की, ही सून घरात येताच या सासुबाईंनी घरकामातून निवृत्ती घेतली असते. आतापर्यंत संसारभरूनी भरपूर राबले. आता सून आली आहे तर बसून खाईन, असं सासुला वाटलं असेल, तर त्यात काही आश्चर्य नाही. सुनेने चहाचा कपही हातात आणून घ्यावा, अशी अपेक्षा असू शकते. भाजीसुद्धा निघडणार नाही, हेही तिने ठणकावून सांगितलं असेल. सुनेनेही हे सुख तिला दिलं असेल.

इथपर्यंत त्या दोघीही चुकल्या, असं वाटत नाही. पण खरी समस्या मात्र इथेच सुरु झाली आणि ती त्या दोघींच्याही लक्षात आली नाही. आपण माणसं आहोत. त्यामुळे एखाद्या विशिष्ट भावनेतून घेतलेला नियम दीर्घकाळ योग्यच राहतो, असं नाही. सुनेकडून हातात आयता चहा मिळवण्याची कल्पना सुखदा आहे, पण काही काळानं आपण हे चुकीचं करतो



अशावेळी मालमत्तेवरचा हक्क सोडायचा असेल, तर...

वारसा हक्काने मिळालेल्या मालमत्तेवरील हक्क कुण्या एकाला सोडायचा असेल तर या दस्ताचा उपयोग होतो. इंग्रजीमध्ये याला 'रिलीज डीड' असेल.



आणि मराठी गाणी कॅंराओकेवर म्हणायला आवडतात. काही हीरी गायकांचा एक व्हॉइसओप ग्रुप आम्हीही केला आहे. त्यावर दर रविवारी स्वतः गायलेले एक गणे आम्ही शेअर करतो. एव झाल्यावर ज्येष्ठ व्हावे, म्हातारे नाही. म्हातारपण इतरांचा आधार शोधत असते, तर ज्येष्ठत्व दुसऱ्याला आधार देते. प्रेमाने जोडलेली घर माणसे, त्यासाठी लागणारे दोन नोड शब्द हे वैभव ज्ञान्याकडे आहे. तो या जगातील खरा श्रीमंत! ती श्रीमंती उपभोगीत आहे. मी

आहोत, असं वादू शकतं. आपल्यातील सूक्ष्म अहंकारापायी त्या निर्णयापासून मागे जाता येत नाही आणि मग भावनिक्त कोडमारा होतो.

या आधीच्या पिढीतील स्त्री घराबंदीचे कितीही जबाबदारीच्या पदावर असली, तरी तिला स्वायत्तपणे हे तिचं वाटायचं, तिची सत्ता तिचे असायची. स्वयंपाकघरातून निवृत्ती म्हणजे घरातील आपत्ती सत्ता गेली, असं वाटणारी ही पिढी आहे. या पौष्टमधल्या सासुबाईंचं चेत झालं. आपली उत्पादकता कमी झाली, आपण निरपेक्ष झालो, ही जाणीव बुद्धाश्रमाची दुःखायक असते. 'आता जगायचं कशाला?' असं त्यांना वाटतं आणि मग 'त्यापेक्षा मला बुद्धाश्रमात सोड...' अशी मागणी येऊ शकते. जर ती व्यक्ती पूर्वी चंद्र कामात गुंतलेली असेल आणि आता वरामुळे काही काम नसेल, तर तिला जीवन अधिक कंटाळाणं होईल. सगळी उडायचं, चहा घ्यायचा, पेरा पाचवायचा, टीकी पाहायचा, दुपारी जेवायचं, थोडा वेळ झोपायचं, पुन्हा चहा घेऊन टीकी पाहायचा, रात्री जेवायचं आणि झोपायचं, हे जर रुटीन झालं, तर जगाण्याचा कंटाळा रोग स्वाभाविक आहे. सून

आपल्या सासुला ते सुख देत आहे, तेच आता त्या सासुला नकोसं झालं आहे. माझ्या घरी मी आधीपासून थोडी सावधगिरी बाळगली होती. माझ्या आईचं वय ९९ आहे. तिला स्वयंपाकघरात वारंवार आता झेपत नाही, पण वाढत्याला मनापासून आवडतं. म्हणून या व्यक्तीही काही जबाबदाऱ्या आम्ही मूढात तिच्यावर टाकल्या आहेत. अर्थात, आम्हाला तिच्या हालचालीकडे पाहावं

हे सगळं आवश्यक आहे. आम्ही तिच्या हातात चहा देत नाही, उलट कधी कधी मीच तिच्याकडे पाणी मागतो. आपण ज्याला म्हणतो, ते केवळ सगळ्या साधनसुविधा उपलब्ध करून दिल्याची मिळत नाही. त्या व्यक्तीच्या माणसूतून असलेल्या अस्तित्वाला गोंजारयला हवं. ते केवळ, तर त्याला बुद्धाश्रमात जावं, असं कुणाला का वाटेल?

कोणत्याही वयात माणसाला खरं सुख मिळते. ते स्थिराणि आणि संवादात. तेवढेच करा.

आज भाजी कोणती करायची?

भाजी निवडणं या कामापासून आजोबा दूर करणं म्हणजे घरात भाजी कोणती करायची? हा निर्णय घेण्यापासून दूर करणं असतं.

घरातल्या ज्येष्ठ व्यक्तीला सतत टीव्हीवरच्या मालिका बघायला खरं रस आहे की, केवळ वेळ घालायच्या म्हणून ती त्या हलक्या चिंत्नांमोर बसून आहे, याचा विचार करा.

सतत टीव्हीसमोर असलेली व्यक्ती हळूहळू घरातील जिवीमधून वगळत जाऊ लागते. वयातून सारहीनी ज्येष्ठ व्यक्ती वगळली जाते. मग ती कुठल्यातून वाजुला पडते. हे टाळणं शक्य आहे.

लागत, शिवाय माझ्या पत्नीला दुपट कामही पडतं, पण तरीही तो चांगला उपाय ठरला आहे. सगळ्या पहिला चहा करणं, दुधा तापवणं ही आईची कामं. मांडी वाळवण्यानंतर ती जागेवर लागणं, दुसऱ्या दिवशीची भाजी निवडून ठेवणं ही कामंही तिचीच. या कामातून, आपल्या घरातून आपण बरेचदाच नाही, हा 'फील' तिला देता येतो. तीही रोज संध्याकाळी सर्व मालिका पाहते. मला आणि पत्नीला मालिका आवडत नाहीत, पण रात्री जेवणांतर एक मालिका आम्ही तिच्यावर बसून पाहतो. 'ब्रेक' मध्ये तिच्याशी आवाजून बोलतो. मी अधूनमधून तिची चेष्टामस्करी करतो. माझा मुलगा घरी येतो तेव्हा आजी-तात्याची गंमतीदार भांडणं सुरु असतात.

हे सगळं आवश्यक आहे. आम्ही तिच्या हातात चहा देत नाही, उलट कधी कधी मीच तिच्याकडे पाणी मागतो. आपण ज्याला म्हणतो, ते केवळ सगळ्या साधनसुविधा उपलब्ध करून दिल्याची मिळत नाही. त्या व्यक्तीच्या माणसूतून असलेल्या अस्तित्वाला गोंजारयला हवं. ते केवळ, तर त्याला बुद्धाश्रमात जावं, असं कुणाला का वाटेल?

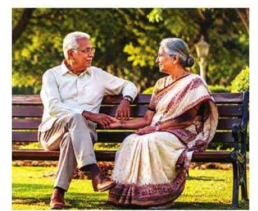
कोणत्याही वयात माणसाला खरं सुख मिळते. ते स्थिराणि आणि संवादात. तेवढेच करा.

- संतोष शेणई,
ज्येष्ठ पत्रकार
santshenai@gmail.com

नेट कॅलिसर तुमची 'सेकंड इनिंग' कुठे?

आयुष्याच्या उत्तरार्धात राहण्यासाठी भारतीय ज्येष्ठोपेची 'या' शहरांना पसंती

- पुणे : आह्लादायक हवामान, वर्षभर तुलनेने समतोल हवामान, उत्तम आरोग्यसुविधा आणि समृद्ध संस्कृतिगत वातावरण यामुळे अनेक ज्येष्ठ वास्तव्यासाठी पुणे शहराची निवड करतात.
- हैदराबाद : स्वच्छ हवा, स्वच्छ रस्से, झाड आणि निवात जैववैविध्य यामुळे हैदराबाद हे शान्त आयुष्य जगू इच्छिणाऱ्यांना आवडत असं शहर आहे.
- कोडंबूर : उत्तम आरोग्यसुविधा आणि शांतता देणारे रुग्णालय, सुख हवामान आणि तुलनेने कमी धडकतीचं जीवन ही या शहराची जोडबळ आहे.
- नाशिक : मुंबईपासून जवळ असले तरी स्वतःचे वेगळे वैशिष्ट्य असलेले, राहणीमानावरचा खर्च कमी असलेले ज्येष्ठाना भुरळ घालते.
- जयपूर : गुलाबी शहर म्हणून प्रसिद्ध असलेलं जयपूर आपल्या समृद्ध इतिहासाबरोबरच चांगल्या आरोग्यसुविधा, खोल्यांची सोय आणि चांगल्या निवात सुविधांमुळे ज्येष्ठाना पसंतीस उत्तरणारे ठरते.
- वडोदा : रव्याधीनतासून दूर असलेलं शहर म्हणून ज्येष्ठाना इथे घेऊन स्थायिक व्हावं वाटतं.
- डेहरादून : शांत आणि सुख हिमाचलाच्या पायथ्याशी वसलेलं डेहरादून हे आह्लादायक हवामान, हिरवाई आणि शांत जीवनशैलीसाठी प्रसिद्ध आहे. शहरापासून दूर, मोठ्याला मानवाच्या विचार असलेल्यांसाठी हे शहर उत्तम निवड ठरते.
- कोची : आयुष्याच्या उत्तरार्धात समुद्राची शानता हवी. पण, उत्तम वैद्यकीय सुविधाही हवाशी असल्याचं, असं वाटणारे ज्येष्ठ निवृत्तीनंतर कोचीला स्थायिक होणं पसंत करतात.
- बेळगाव : आह्लादायक हवा आणि स्वस्त शहर, कमी खर्चाकडून अत्युत्कृष्ट वेळापत्रक हा निवृत्तीनंतरच्या वास्तव्यासाठी पर्याय मानला जातो.
- चंडीगड : नियोजनबद्ध शहराच्या रूढ रस्तें, भरपूर उद्याने, नैतिकायक वेळापत्रक हा निवृत्तीनंतरच्या आयुष्यात ज्येष्ठानाची सुखकर पर्याय ठरतो.



कोणत्याही वयात माणसाला खरं सुख मिळते. ते स्थिराणि आणि संवादात. तेवढेच करा.

बहीण-भावाचा दस्त

हक्कसोड पत्र नोंदणीकृत करून दिल्यावर दस्त लिहून देणाऱ्या व्यक्तीचा त्या मिळकतीमध्ये हक्क कायचा संस्पृष्टता येतो आणि लिहून घेणाऱ्या व्यक्तीचा त्या मिळकतीमधील मालकी हिस्सा त्या प्रमाणत वाढतो. एकादा हक्कसोड पत्र नोंदविल्यावर ते अपवादितकर परिस्थितीमध्ये म्हणजेच कसवणूक करून घ्यायचे किंवा जोर-जबरदस्ती करून घ्यायचे वेगळे सिद्ध झाल्यास विहित मुदतीमध्ये कोर्टात दावा लावूनच ते रद्द होऊ शकते. बहुतांश वेळा बहिणीचा वडिलोपार्जित मिळकतीमधील हक्क भावाच्या लाभाने सोपण्यासाठी या दस्ताचा वापर केला जात असल्यामुळे त्याला बहीण-भावाचा दस्त असेही म्हणतात. दस्त करणाऱ्या पक्षकारांची परस्परांबद्दलची आपुलकीच या दस्तामार्गे कारणीभूत असते.

हक्कसोड का सोडवूक?

कधीकधी हक्कसोड पत्रामार्गे बहिणीचे लग्न झाले आहे मग त्यांनी आता हक्कसोडला पाहिजे अशी 'सोडवणूक' भावना असल्याचे दिसून येते. बहिणीला हक्क हवा असेल तर हक्क सोडवायचा, तिची आर्थिक परिस्थिती उत्तम असेल तरी हक्क सोडवायचा, अशीही मागणी होते. परंतु कायद्यामध्ये भावना चालत नाहीत. नैतिकता आणि कायदेविरुद्ध हक्क वेगळेच असू शकतात. 'आई-वडिलांचा सांभाळ करणे' हे हक्क मिळेन हे कायद्याला अग्रिमत नाही किंवा आर्थिक स्थितीप्रमाणे मिळकतीमधील वारसाचे हक्क कमी-जास्त होत नाहीत.

आणि तिच्या पुढच्या पिढीकडे ती मिळकत वडिलोपार्जित म्हणून जात नाही, असे निकाल १९८६-८७ पासून मग. सवीच्या न्यायालयाने दिलेले आहेत. बऱ्याच वेळा मिळकत स्वतंत्र किंवा वडिलोपार्जित आणि रॉयल्टी वगळी वाचून वाढ-विवादा होतात. अशा वेळी बहीणपक्षाच्या जूनतं कमी रॉयल्टी लागू होणाऱ्या किंवा कुठलीच रॉयल्टी नसत नाही त्याला लागणारा मुल्यप्रासाराक्षा दस्त करणे श्रेयस्कर असते.

- अॅड. रोहित परदे
rohiterrande24@gmail.com

साठीनंतर

वय झाल्यावर ज्येष्ठ व्हावे, म्हातारे मात्र होऊ नये, मनावर सुरकुत्या पडू देऊ नये!

मी रॉय शासनाच्या समाजकल्याण खात्यातून वर्ग दोन अधिकारी या पदावरून २०१४ मध्ये सेवानिवृत्त झाले. स्वतःसाठी सगळेच जगात, पण समाजासाठी जगले पाहिजे, या जाणिवेनून गर्जना आर्थिक साहाय्य, शासकीय कामात मदत, नोकरी देणे, शैक्षणिक मदत करणे असं जे करायचे ते करून घरातूनच आयुष्य उभं करणाऱ्याचा माझा प्रयत्न असतो.

सेवानिवृत्तीनंतरही कुण्याच्या उपयोगी पडता येईल, असे काम सुरू ठेवण्याचा निर्णय मी घेतला.

त्याच विचाराने गरीब-गर्जना शासकीय योजनांचा लाभ मिळवून देणे, दिव्यांगांना मदत करणे, शासकीय सेवेतील मूत कर्मचाऱ्यांच्या वारसांना अनुभवा तत्वेवरील नोकरी मिळवून देण्यासाठी प्रयत्न करणे अशी कामे मी सुरू ठेवली आहेत. मला लेखनीची आवड आहे. सेवानिवृत्तीनंतर आम्ही पत्नी-सुननेने मिळून रंश-विदेशीत प्रवास केला. मला रंश-विदेशीत प्रवासामध्ये लिहिण्याची सवय आहे. रंश-विदेशीत प्रवासामध्ये लिहिण्याची सवय आहे. रंश-विदेशीत प्रवासामध्ये लिहिण्याची सवय आहे. रंश-विदेशीत प्रवासामध्ये लिहिण्याची सवय आहे.

गणप्याच्या आवडीतून जुन्या चित्रपटातील हिंदी

वर्तमानात जगते, त्यामुळे प्रत्येक क्षण आनंदाने उपभोगते. वयातून येणाऱ्या शारीरिक व्यथेची मंत्री करची. मी प. ल. देशपांडे म्हणतात, तसे मंत्री रंजनी शारीरिक कुकुर ही तुम्ही जिवंत असण्याची खूप आहे. सगळ्या आयुष्याचा उत्तरार्ध सुखाचा द्यावा म्हणून मी आरोग्यपूर्ण आहार, विहार, व्यायाम आणि समाजसेवेंत स्वतःला गुंतवून घेतले आहे.

- भारती गुळवे,
नाशिक.

वय झाल्यावर ज्येष्ठ व्हावे, म्हातारे मात्र होऊ नये, मनावर सुरकुत्या पडू देऊ नये!



वयाच्या साठीनंतर आनंदाने जगण्याचे असे काही मंत्र तुम्हाला साधले आहेत? तुम्ही काय करता? - नुस्तं दिवकम नको, अनुभवांना साधलेली काही व्हडवी शोधत करणाऱ्या निवडक लेखनात प्रसिद्धी दिली जाईल. तुमचे अनुभव पाठविल्यावर ई-मेल व व्हॉट्सअप नंबर वराली दिवना आहेच

